

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मानवता और पाप, सत्र 9, पाप का सिद्धांत, डीए कार्सन, पापों का आंतरिक महत्व

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ रॉबर्ट ए पीटरसन हैं जो मानवता और पाप के सिद्धांतों पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 9 है, पाप का सिद्धांत, डीए कार्सन, पाप का आंतरिक महत्व।

प्रार्थना। दयालु पिता, हम आपके सामने झुकते हैं, आपके पुत्र के माध्यम से आपकी उपस्थिति में आते हैं, जो हमें पहुंच प्रदान करता है। हम आपके वचन के लिए आपका धन्यवाद करते हैं। हम इसकी सच्चाई के लिए आपका धन्यवाद करते हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि हमें कठिन बातें भी सिखाएं जिन्हें हमें सुनने की जरूरत है। अपनी इच्छा के अनुसार हम में कार्य करें। हम प्रार्थना करते हैं कि मध्यस्थ यीशु मसीह के माध्यम से हमें और हमारे परिवारों को आशीर्वाद दें। आमीन। हमने मानवता के बारे में सोचा है कि इसे भगवान की छवि में बनाया

गया है, और मानव संविधान या श्रृंगार के बारे में।

कार्सन उल्लेखनीय हैं। वे बहुत प्रतिभाशाली हैं, और उन्होंने कई वर्षों तक प्रभु की सेवा निष्ठापूर्वक की। और शायद मैं इसे यहीं छोड़ दूँ, और आपको कहानियाँ न बताऊँ।

कार्सन ने क्रिस्टोफर मॉर्गन और मेरे द्वारा संपादित एक पुस्तक की प्रस्तावना लिखी। मॉर्गन कैलिफोर्निया बैपटिस्ट यूनिवर्सिटी में धर्मशास्त्र के प्रोफेसर और ईसाई मंत्रालयों के स्कूल के डीन हैं। हमने क्रॉसवे के लिए थियोलॉजी इन कम्युनिटी नामक पुस्तकों की एक श्रृंखला बनाई, जो सुनने में बिल्कुल वैसी ही है जैसी लगती है।

यह विद्वानों के समूह हैं जो एक साथ मिलकर काम करते हैं। हमने किसी तरह का परिचय दिया, और फिर हमने पुराने नियम के विशेषज्ञों से पुराने नियम में उस विषय पर लिखने को कहा। यही बात नए नियम के लिए भी लागू होती है।

हमारे पास व्यवस्थित धर्मशास्त्र पर एक अध्याय था, कभी-कभी बाइबिल धर्मशास्त्र पर एक अध्याय, और फिर ऐसे विषयों और विषयों पर विशेष अध्याय जो लोगों को आकर्षित करते थे। इसलिए, उदाहरण के लिए, निश्चित रूप से पाप पर एक पुस्तक में शैतान पर एक अध्याय मूल्यवान होगा, और लोग उसमें रुचि लेंगे। और ईसाई जीवन पर एक अध्याय और इसी तरह।

पाप का समकालीन महत्व, डीए कार्सन। पाप के आंतरिक और समकालीन महत्व को अलग करना सार्थक है। बेशक, इन दोनों को बिल्कुल अलग नहीं रखा जा सकता।

फिर भी, इसके अंतर्निहित महत्व के अंतर्गत, हमें यह याद रखना चाहिए कि बाइबल में, ईसाई विचार की संपूर्ण संरचना में पाप का क्या स्थान है। इसके समकालीन महत्व के अंतर्गत, हम यह

जांच करेंगे कि पाप पर बाइबल की शिक्षा किस तरह से हमारे अपने युग और ऐतिहासिक स्थान की कुछ विशेषताओं को संबोधित करती है। पहला शीर्षक अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह दूसरे शीर्षक में समाहित है।

वास्तव में, सुसमाचार की बाइबलीय रूप से विश्वसनीय समझ के लिए पाप किस तरह से आंतरिक रूप से महत्वपूर्ण है, इसकी रूपरेखा बनाना इसके चिरस्थायी महत्व के लिए तर्क देना है और इसलिए इसके समकालीन महत्व को भी प्रदर्शित करना है। तभी हम उन तरीकों पर विचार करने के लिए बेहतर स्थिति में होंगे, जिनमें पाप की परिपक्व समझ हमारे अपने सांस्कृतिक संदर्भ में भविष्यवाणी और शक्तिशाली रूप से बोलती है। तो, दो बड़े शीर्षक।

दूसरा नंबर है *पाप का समकालीन महत्व*। सबसे पहले, पाप का आंतरिक महत्व। इस बात पर कोई सहमति नहीं हो सकती कि मोक्ष क्या है, जब तक कि इस बात पर सहमति न हो कि मोक्ष हमें किससे बचाता है।

समस्या और समाधान एक साथ जुड़े हुए हैं। एक दूसरे को स्पष्ट करता है। पाप क्या है, इसकी गहरी समझ में डूबे बिना क्रूस से क्या हासिल होता है, इसकी गहरी समझ हासिल करना असंभव है।

इसके विपरीत, क्रूस के बारे में अपनी समझ को बढ़ाना पाप के बारे में अपनी समझ को बढ़ाना है। दूसरे शब्दों में कहें तो, पाप बाइबल की कथानक रेखा को स्थापित करता है। इस चर्चा में, पाप शब्द का इस्तेमाल आम तौर पर एक सामान्य शब्द के रूप में किया जाएगा जिसमें अधर्म, अपराध, बुराई, मूर्तिपूजा और इसी तरह की अन्य चीजें शामिल हैं, जब तक कि संदर्भ यह स्पष्ट न कर दे कि इस शब्द का इस्तेमाल अधिक सीमित अर्थ में किया जा रहा है।

सामान्य अर्थ में, पाप ही वह समस्या है जिसका समाधान परमेश्वर करता है। संघर्ष हमें उत्पत्ति के तीसरे अध्याय से प्रकाशितवाक्य के अंतिम अध्याय तक ले जाता है। पतन से पहले, परमेश्वर का निर्णय था कि जब उसने मनुष्य को बनाया तो उसने जो कुछ भी बनाया वह अच्छा और बहुत अच्छा था।

हमें यह नहीं बताया गया है कि सर्प ने विद्रोह कैसे किया, लेकिन पहले मानव जोड़े के पाप ने हमें पाप के कई मानवीय आयामों से परिचित कराया। हम परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह, परमेश्वर के समान बनने के लिए दुष्ट प्रलोभन के आगे झुकना, और इस दृष्टिकोण के प्रति खुलापन पाते हैं कि परमेश्वर पापियों पर मृत्यु की सजा नहीं लगाएगा, और इस प्रकार निहित आरोप कि परमेश्वर के वचन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। किसी विशिष्ट आदेश की अवहेलना, अर्थात् उल्लंघन, परमेश्वर के साथ परम संगति का त्याग, शर्म और अपराध की शुरूआत, दूसरों को दोष देकर उत्सुक आत्म-औचित्य, दर्द और हानि की शुरूआत, और मृत्यु के विभिन्न आयाम।

उत्पत्ति के तीसरे अध्याय में यह सब है। उत्पत्ति के चौथे अध्याय में हमें पहली हत्या और पाँचवें अध्याय में हमें दोहे मिलते हैं, और फिर वह मर गया, और फिर वह मर गया, और फिर वह मर

गया। अगले चार अध्याय हमें जल प्रलय और उसके परिणामों के बारे में बताते हैं, लेकिन इससे मानवता में कोई सुधार नहीं होता, जैसा कि ग्यारहवें अध्याय में स्पष्ट किया गया है।

पवित्रशास्त्र की कहानी के नाटक के माध्यम से चलते रहना आसान होगा, कुलपति काल में पाप के आकार और गहराई का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करना, जंगल में भटकने के वर्षों में, न्यायाधीशों के समय में, दाऊद के राजतंत्र के पतन में, और निर्वासन की अस्वस्थता और वापस लौटने वालों के बीच लगातार पापपूर्ण चूक में। यीशु अपने दिनों में जिन लोगों का सामना करता है, वे भी इससे बेहतर नहीं हैं। प्रेरित पौलुस द्वारा पूरी मानवता के खिलाफ़ बड़े पैमाने पर अभियोग, रोमियों 1:18 से 3:20, क्रूस द्वारा क्या हासिल किया गया, इसके बारे में सबसे गहरे बयानों में से एक के लिए मंच तैयार करता है।

रोमियों के अध्याय 3 की आयतें 21 से 26 तक। वास्तव में, त्रिएक परमेश्वर ने अपने बारे में जो कुछ भी प्रकट किया है, वह इस संदर्भ में प्रकट होता है कि ईश्वरत्व का प्रत्येक सदस्य परमेश्वर के चुने हुए लोगों के उद्धार, पाप से उनके उद्धार में कैसे योगदान देता है। यह व्यर्थ नहीं है कि नए नियम का पहला अध्याय स्थापित करता है कि वर्जिन मैरी से पैदा हुए बच्चे को, उद्धारण, यीशु कहा जाएगा, क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा, उद्धारण बंद करें, मैथ्यू 1:21।

कार्सन ने कहा कि वह एनआईवी, न्यू इंटरनेशनल वर्जन से उद्धारण दे रहे हैं। पुराने नियम की तम्बू मंदिर प्रणाली का बहुत कम अर्थ समझ में आता है जब तक कि कोई पाप के बारे में कुछ न समझे। निश्चित रूप से, इसका कोई भी प्रतिरूप समझ में नहीं आता, जिसे इब्रानियों के पत्र में आश्चर्यजनक सावधानी से तैयार किया गया है।

चाहे कोई परमेश्वर के क्रोध के विषय पर विचार करे या उसके बचाने वाले प्रेम के विशेष उद्देश्यों पर, चाहे परमेश्वर सिनाई से गरजता हो या यरूशलेम पर रोता हो, चाहे हम व्यक्तिगत विश्वासियों पर ध्यान केंद्रित करें या परमेश्वर के लोगों की वाचागत पहचान पर, चाहे कोई यरूशलेम पर बरसने वाले लौकिक न्याय पर अचंभित हो या नए स्वर्ग और नई पृथ्वी की महिमा की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा हो, वह आधार जो पूरे खाते को एक साथ रखता है वह पाप है और कैसे परमेश्वर, दया में समृद्ध, अपने स्वयं के गौरव और अपने लोगों की भलाई के लिए पापों और पापियों से निपटता है। पाप, "परमेश्वर को अपमानित करता है, न केवल इसलिए कि यह सीधे परमेश्वर पर हमला बन जाता है, जैसे कि अधर्म या ईशनिंदा में, बल्कि इसलिए भी कि यह परमेश्वर द्वारा बनाई गई चीज़ों पर हमला करता है," एक शानदार किताब से।

इसने मेरे पुराने मानक को बदल दिया। यह पुस्तक कॉर्नेलियस प्लांटिंगा की है, वे नील जूनियर द्वारा लिखी गई है, *नॉट द वे इट्स सपोज्ड टू बी, ए ब्रीफ़ ट्रीटमेंट ऑफ़ सिन*, एर्डमैन की 1995। यह एक शक्तिशाली पुस्तक है, बहुत शक्तिशाली पुस्तक, पूरी तरह से इंजीलवादी, संस्कृति से समकालीन चित्रणों से भरी हुई। और मेरे पिछले रत्न के विपरीत, इसमें अनुग्रह है।

यह एक ईसाई पुस्तक है, और यह कुछ आशा देती है। मैंने पिछले व्याख्यान में हेनरी फेयरली की पुस्तक, *द सेवन डेडली सिंस टुडे* का उल्लेख किया था। चर्च के इतिहास में, विशेष रूप से

मध्य युग में, सात घातक पाप थे जिन पर ध्यान केंद्रित किया गया था और पाप की भयानक कुरूपता का वर्णन करने में उनका बहुत उपयोग किया गया था।

हेनरी फेयरली, फेयरली, एक ब्रिटिश सामाजिक आलोचक थे जो संयुक्त राज्य अमेरिका चले गए और एक अमेरिकी सामाजिक आलोचक बन गए। अन्य बातों के अलावा, उन्होंने पाप पर यह अद्भुत पुस्तक लिखी। मैंने आपको बताया कि यह बहुत अच्छी है, यह एक आध्यात्मिक एक्स-रे मशीन की तरह है, और यह बिना किसी दया के हमारे दिलों को उजागर करती है।

इसलिए मेरे छात्र, हालांकि उन्होंने किताब में पढ़ा, उस आदमी ने कहा कि वह एक अनिच्छुक अविश्वासी है, वे हमेशा मुझसे बहस करते थे। आप जानते हैं, उस दिन असाइनमेंट जमा करना था, इसलिए हम किताब पर चर्चा करने जा रहे हैं, मुझे नहीं पता, कितने, 20 मिनट या उससे भी ज़्यादा। उन्होंने हमेशा कहा कि वह एक गुप्त ईसाई है।

मैंने कहा, क्षमा करें, लेकिन हमें उस व्यक्ति के मुंह से जो निकलता है, उसे सुनना होगा। वह खुद को अनिच्छुक अविश्वासी कहता है क्योंकि यह पुस्तक बहुत शक्तिशाली है। इसमें सुंदर रेखाचित्र हैं जो विस्मयकारी, मर्मस्पर्शी और दिलचस्प हैं।

और फिर लोलुपता और लालच और वासना पर अध्याय और, ओह माय वर्ड। मैंने कहा कि इसके दो कारण हैं: हालांकि वह एक अविश्वासी है, वह एक अनिच्छुक व्यक्ति है, और उसकी पुस्तक वही हासिल करती है जो आप आज मुझे दिखा रहे हैं: यह मेरे छात्रों के बारे में बात कर रही है। नंबर एक, वह उधार ली गई पूंजी का उपयोग करता है।

वह कहते हैं, "निश्चित रूप से आपको ऑगस्टीन को पढ़ना चाहिए, और यदि आपने पिलग्रिम्स प्रोग्रेस नहीं पढ़ी है, तो आप एक अशिक्षित इंसान हैं," और इसी तरह आगे भी। सीएस लुईस, "ओह, वह सबसे अच्छे हैं," और इसी तरह आगे भी। वह उधार की पूंजी का उपयोग कर रहे हैं। वह मनुष्य की पापपूर्णता की गहरी समझ रखने वाले ईसाई लेखकों का उपयोग कर रहे हैं।

नंबर दो, उस आदमी का काम एक बदमाश होना था। वह एक सामाजिक आलोचक था, और अंदाज़ा लगाइए क्या? वह इसमें बहुत अच्छा था, इसलिए वह जानता था कि मानव हृदय में कैसे प्रवेश किया जाए।

लेकिन वह एक बेहतरीन किताब थी, लेकिन यह एक निराशाजनक किताब थी क्योंकि इसमें कोई समाधान नहीं है। जब प्लांटिंगा की किताब आई, नॉट द वे इट्स सपोज्ड टू बी, ए ब्रीफ टीटमेंट ऑफ सिन, इसने फेयरली की किताब की जगह ले ली। छात्र अभी भी इस बात से चिढ़ते हैं कि कुछ चित्र वास्तविक जीवन से बहुत ही धिनौने हैं।

ओह, मैं उन दो लोगों का ज़िक्र भी नहीं करना चाहता जो मेरे दिमाग में आते हैं। मैं नहीं चाहता कि दर्शक बीमार हो जाएँ। यह भयानक है।

वैसे भी, यह एक बेहतरीन किताब है। नील.प्लांटिंगा, *नॉट द वे इट्स सपोज़्ड टू बी*। यह अभिव्यक्ति धर्मशास्त्रियों के लिए पाप के सिद्धांत के बारे में बात करने के लिए आम हो गई है, और यह सही भी है।

पाप विद्रोह है। मैं कार्सन के साथ जारी रख रहा हूँ। पाप परमेश्वर के अस्तित्व के विरुद्ध, उसके स्पष्ट वचन के विरुद्ध, उसके बुद्धिमान और व्यवस्थित शासन, उसके राज्य और विधान के विरुद्ध विद्रोह है।

इसका परिणाम सृष्टि में अव्यवस्था और ईश्वर के स्वरूप को धारण करने वालों की आध्यात्मिक और शारीरिक मृत्यु है। पाप नहीं तो मृत्यु नहीं। पाप ही मृत्यु है।

जब पूर्ण न्याय के साथ, पूर्ण न्याय के साथ, परमेश्वर सभी पापियों की निंदा कर सकता था, और कोई भी उसे न्यायोचित रूप से दोषी नहीं ठहरा सकता था। वास्तव में, बाइबल की कहानी परमेश्वर को विशुद्ध अनुग्रह से दर्शाती है, जो हर भाषा और जनजाति से बड़ी संख्या में पुरुषों और महिलाओं को बचाता है, उन्हें सुरक्षित रूप से और अंततः एक नए स्वर्ग और एक नई पृथ्वी पर लाता है जहाँ पाप का अब कोई बोलबाला नहीं है और यहाँ तक कि इसके प्रभावों को भी पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया है। जब मुझसे पूछा गया है, तो मैं नरक के सिद्धांत का एक विशेषज्ञ हूँ, सौभाग्य से, या दुर्भाग्य से, नई दुनिया में नरक कहाँ है? जवाब है कि यह नई सृष्टि के बाहर है।

यह नए स्वर्ग और नई पृथ्वी का हिस्सा नहीं है। यह अस्तित्व में है। यह हमेशा के लिए अस्तित्व में है, लेकिन यह शहर के बाहर है।

और उससे भी ज़्यादा, यह दूर है। यह ध्यान का केंद्र नहीं है, हालाँकि बाइबल के अंतिम तीन अध्यायों में इसका उल्लेख है। इसलिए यह कहने के प्रयास कि हर कोई बच जाएगा या दुष्टों का नाश हो जाएगा, बाइबल की कहानी के अंत के बिल्कुल विपरीत हैं।

क्योंकि प्रकाशितवाक्य के अध्याय 20, 21 और 22 में दुष्टों के लिए अनन्त दण्ड का स्पष्ट चित्रण है। क्या आप परमेश्वर की कहानी को फिर से लिखना चाहते हैं? आपको प्रकाशितवाक्य 23 की आवश्यकता है। वहाँ कुछ भी नहीं है।

ऐसा कुछ नहीं है। हम ईश्वर की कहानी को फिर से नहीं लिख सकते। संक्षेप में, कार्सन ने लिखा, अगर हम बाइबल में पाप की बड़ी भूमिका को नहीं समझते हैं और इसलिए, बाइबल के प्रति वफादार ईसाई धर्म में, तो हम बाइबल को गलत तरीके से पढ़ रहे होंगे।

सकारात्मक रूप से, पाप की एक गंभीर और यथार्थवादी समझ बाइबल को एक समझदार तरीके से पढ़ने के लिए आवश्यक चीजों में से एक है। यह एक जिम्मेदार व्याख्या के लिए आवश्यक मानदंडों में से एक है। बाइबल में पाप के बारे में जो कुछ कहा गया है, उसके आधार पर कुछ धार्मिक संरचनाओं को सामने रखना मददगार हो सकता है और बदले में, पाप के बारे में हमारी समझ को आकार देता है।

यहाँ एक रूपरेखा दी गई है। पाप उन अंशों से जुड़ा है जो परमेश्वर के बारे में महत्वपूर्ण बातों का खुलासा करते हैं, और वे बातें उसके बाद आती हैं। सबसे पहले, पाप उन सभी प्रबुद्ध अंशों से गहराई से जुड़ा हुआ है जो परमेश्वर के बारे में महत्वपूर्ण बातों का खुलासा करते हैं।

निर्गमन 34:6 और 7 पर विचार करें, जहाँ परमेश्वर मूसा से कुछ शब्द कहता है जो सिनाई पर्वत पर चट्टान की एक दरार में छिपा हुआ है। मूसा को न तो परमेश्वर को सीधे देखने की अनुमति है और न ही वह ऐसा करने में सक्षम है। अगर वह ऐसा करता है, तो वह मर जाएगा।

निर्गमन 33:20. परमेश्वर ने कहा, कोई भी मुझे देखकर जीवित नहीं रह सकता। मूसा को परमेश्वर की महिमा के बाद के चमक के अंतिम छोर से ज़्यादा कुछ देखने की अनुमति नहीं है।

मेरे धर्मशास्त्र के प्रोफेसर ने इसे ईश्वर का परिणाम या स्वयं कानून कहा, जो कभी-कभी इसे ईश्वर की पीठ भी कहते हैं। लेकिन उसे सुनने की अनुमति है और वह ऐसा करने में सक्षम है। ईश्वर ने खुद को मूसा के सामने शब्दों में सर्वोच्च रूप से प्रकट किया, और वे शब्द एक साथ चलते और उलझन में डालते हैं।

यह हैरान करने वाला है। इटैलिकाइज़्ड शब्द इस बात की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं कि हैरान करने वाली बात क्या है। भगवान, भगवान, दयालु और कृपालु भगवान।

मैं निर्गमन 34 को उद्धृत कर रहा हूँ, जो कि ईश्वर के गुणों की बाइबिल की परिभाषा है, यदि आप चाहें तो, पुराने नियम के बाकी हिस्सों पर गहरा प्रभाव डालने वाला और नए नियम में ईश्वर की प्रस्तुति को रेखांकित करने वाला। प्रभु, प्रभु, दयालु और अनुग्रहकारी ईश्वर, क्रोध में धीमा और प्रेम और विश्वास में भरपूर, हज़ारों लोगों के प्रति प्रेम बनाए रखता है। और यहाँ कुछ इटैलिक और दुष्टता, विद्रोह और पाप को क्षमा करने वाले आते हैं।

फिर भी वह दोषियों को दण्डित किए बिना नहीं छोड़ता। वह माता-पिता के पापों के लिए बच्चों और उनके बच्चों को तीसरी और चौथी पीढ़ी तक दण्डित करता है। इटैलिक का अंत। उद्धरण का अंत।

यहाँ वह ईश्वर है जो दुष्टता, विद्रोह और पाप को क्षमा करता है, फिर भी वह दोषियों को दण्डित किए बिना नहीं छोड़ता। क्या यह किसी प्रकार की अजीब द्वंद्वत्मकता है? शायद प्रक्रियाओं को बदलना? कलवारी तक तनाव पूरी तरह से हल नहीं होता।

निश्चित रूप से, इस अजीब तनाव का केंद्र पाप है। या बतशेबा को बहकाने और उसके पति की हत्या करने की उसकी निर्दयी योजना के बाद दाऊद के शब्दों पर विचार करें। टूटन और पश्चाताप में गिरा दिया गया।

वह न केवल परमेश्वर से दया की भीख मांगता है, भजन 51:1, बल्कि उससे कहता है, “मैंने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया है, और जो तेरी दृष्टि में बुरा है, वही किया है।” (पद चार, यशायाह 51)। एक स्तर पर, बेशक, यह स्पष्ट रूप से असत्य है।

दाऊद ने बतशेबा, उसके पति, उसके बच्चे, अपने परिवार, सैन्य उच्च कमान और पूरे राष्ट्र के खिलाफ पाप किया है, जिसके लिए वह मुख्य न्यायाधीश के रूप में कार्य करता है। फिर भी दाऊद के शब्दों में कुछ गहरा अर्थ है। पाप को उसके सबसे गहरे अर्थ में क्या कहा जा सकता है, वह यह है कि यह परमेश्वर के विरुद्ध है।

जब हम पापों के बारे में क्षैतिज अक्षों पर सोचते हैं, तो हम खुद को बहुत आसानी से छोड़ देते हैं, चाहे वे सामाजिक रूप से अस्वीकृत व्यवहार के क्षैतिज पाप हों या नरसंहार के क्षैतिज पाप। जो बात पापों को वास्तव में घिनौना, आंतरिक रूप से जघन्य बनाती है, और जो उन्हें स्वयं परमेश्वर द्वारा दण्ड के योग्य बनाती है, वह यह है कि वे जीवित परमेश्वर के विरुद्ध सबसे पहले, सबसे बड़े और सबसे गहरे पाप हैं, जिन्होंने हमें अपने लिए बनाया है और जिनके सामने हमें एक दिन जवाब देना होगा। दूसरे शब्दों में, पाप से पश्चात्ताप का यह भजन परमेश्वर के साथ पाप के संबंध के बारे में महत्वपूर्ण बातें प्रकट करता है।

इस तरह, बाइबल की शिक्षाओं के ईसाई अध्ययन का नाम उपयुक्त है क्योंकि यह सब धर्मशास्त्र है। अरे हाँ, हम परमेश्वर के सिद्धांत को धर्मशास्त्र कहते हैं, लेकिन यह सब धर्मशास्त्र है। हर सिद्धांत परमेश्वर से संबंधित है।

या फिर हम खुद को चौथे सेवक गीत की याद दिला सकते हैं, जिसमें ये शब्द शामिल हैं, यशायाह 53:4, 5 और 10. बेशक, उसने हमारा दर्द उठाया और हमारी पीड़ा को झेला। फिर भी हमने उसे परमेश्वर द्वारा दंडित, उसके द्वारा पीड़ित और पीड़ित माना।

लेकिन वह हमारे अपराधों के लिए छेदा गया था। वह हमारे अधर्म के लिए कुचला गया था। वह दण्ड जो हमें शांति प्रदान करता था, उस पर था।

और उसके घावों से हम चंगे हो जाते हैं। फिर भी यह प्रभु की इच्छा थी कि वह उसे कुचल दे और उसे कष्ट दे। और यद्यपि प्रभु अपने जीवन को पाप के लिए बलिदान कर देता है, फिर भी वह अपनी संतान को देखेगा और अपने दिनों को लम्बा करेगा।

और उसके हाथ में यहोवा की इच्छा सफल होगी। फिर से, यशायाह 53:4, 5 और 10। यहाँ यहोवा की अपनी योजना के अनुसार दंडात्मक प्रतिस्थापन है, जो हमारे दुख, हमारे अपराध, हमारे अधर्म, हमारी सज़ा और हमारे पाप को ले लेता है।

फिर से, एक बार हम याद करते हैं कि कैसे, यूहन्ना के सुसमाचार में, शब्द संसार आम तौर पर परमेश्वर के खिलाफ गहरे दोषी विद्रोह में मानवीय नैतिक व्यवस्था को संदर्भित करता है, यानी शब्द संसार का आम तौर पर यह पापी संसार होता है। यूहन्ना 3:16 के शब्द, अतुलनीय अनुग्रह की दुहाई देते हैं।

दुनिया के लिए परमेश्वर के प्रेम को स्वीकार किया जाना चाहिए, इसलिए नहीं कि दुनिया इतनी बड़ी है, बल्कि इसलिए कि दुनिया इतनी बुरी है। परमेश्वर ने इस पापी दुनिया से इतना प्रेम किया। उसने अपना इकलौता बेटा दे दिया।

और संदर्भ से पता चलता है कि इस उपहार का स्थान केवल अवतार में नहीं है, बल्कि यीशु को मृत्यु में ऊपर उठाया जाना है। आयत 14 और 15 में ऊपर उठाए जाने और हॉप्स के लगातार उपयोग की तुलना करें। ओह, मैं ऊपर उठाता हूँ, मैं यूहन्ना में ऊपर उठाता हूँ।

इस पापी संसार के लिए छुटकारे की योजना परमेश्वर के अनपेक्षित प्रेम से प्रेरित है, जो उसके पुत्र के उपहार में सबसे शानदार ढंग से व्यक्त किया गया है, जिसकी मृत्यु अकेले ही निंदा की सजा को हटाने के लिए पर्याप्त है। पद 17 और 18 ऐसे प्रेम को अस्वीकार करना जो पाप में बने रहना है, परमेश्वर के क्रोध के अधीन रहना है। यूहन्ना 3 का पद 36. यहाँ तक कि ये मुट्ठी भर पद परमेश्वर, उसके चरित्र, उसके छुटकारे के उद्देश्य, उसके प्रेम और उसके क्रोध के बारे में बहुत कुछ कहते हैं।

जिस धुरी के इर्द-गिर्द ये विषय हल होते हैं, जिस धुरी के इर्द-गिर्द ये विषय घूमते हैं, वह धुरी पाप है। कोई भी व्यक्ति सैकड़ों ऐसे अंशों की ओर आसानी से ध्यान आकर्षित कर सकता है जहाँ ईश्वर और पाप के बीच समान गतिशीलता व्याप्त है। लेकिन मैं खुद को एक और तक सीमित रखूँगा।

पुनरुत्थान पर प्रसिद्ध अध्याय के अंत में, पौलुस होशे 1:13, 14 से लिए गए शब्दों में दो अलंकारिक प्रश्न उठाता है। होशे 1:13, 14. उद्धरण, "हे मृत्यु, तेरी विजय कहां है? हे मृत्यु, तेरा डंक कहां है?" 1 कुरिन्थियों 15:55.

फिर वह अपने ही प्रश्न का उत्तर देता है। "मृत्यु का डंक पाप है, और पाप का बल व्यवस्था है। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें विजय प्रदान करता है।"

1 कुरिन्थियों 15, आयत 56 और 57. दूसरे शब्दों में, पाप की प्राणघातक शक्ति को परमेश्वर द्वारा अपने पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह के पुनरुत्थान द्वारा पराजित किया गया है। तो एक बार फिर, परमेश्वर ने अपने पुत्र के पुनरुत्थान में जो कुछ किया है उसका प्रदर्शन पाप और उसकी क्रूर शक्ति के कारण हुआ है।

पाप उन सभी प्रबुद्ध अंशों से गहराई से जुड़ा हुआ है जो परमेश्वर के बारे में महत्वपूर्ण बातों का खुलासा करते हैं। और यदि परमेश्वर के बारे में, तो उस उद्धार के बारे में जो परमेश्वर ने मसीह में किया है। वाह, कार्सन अच्छा है, है न? पाप उन अंशों से जुड़ा हुआ है जो परमेश्वर के बारे में महत्वपूर्ण बातों का खुलासा करते हैं।

मैं अपने बारे में एक कहानी सुनाऊंगा। मेरे सक्रिय सेमिनरी शिक्षण करियर के अंत में, कार्सन ने मुझसे अपनी लिखी एक किताब के लिए एक सिफारिश लिखने के लिए कहा। यह किताब, ईश्वर के पुत्र के शब्दों पर आधारित है, खासकर जब यह मुस्लिम देशों में सुसमाचार प्रचार से संबंधित हो।

क्योंकि कुछ ईसाई कह रहे थे, आप जानते हैं क्या? यह अपमानजनक भाषा है। और शायद हम इसे ठुकरा सकते हैं और यीशु को सीधे ईश्वर का पुत्र नहीं कह सकते। और, बेशक, कार्सन ने शास्त्रों का अध्ययन किया और कहा, हम ऐसा नहीं कर सकते।

हम इसे यथासंभव करुणापूर्वक व्यक्त करने का प्रयास कर सकते हैं, लेकिन हम ऐसा नहीं कर सकते। यह बहुत महत्वपूर्ण है। वैसे भी, मैंने वह सिफारिश लिखी और उसे एक ईमेल भेजा।

उसका ईमेल पता ढूँढना बहुत मुश्किल है। मैं आपको यह नहीं बताऊँगा कि वह क्या है क्योंकि उसके पास बहुत सारे ईमेल होंगे। यहाँ एक ऐसा व्यक्ति है जिसे अपने करियर के हर महीने कहीं न कहीं पढ़ाने के लिए अनुरोध प्राप्त होता है।

मैं नहीं, कार्सन। मैंने उसे एक ईमेल भेजा। मैंने कहा, मैंने तुमसे पहले कभी ऐसा नहीं कहा, लेकिन शायद अब यह सही समय है।

आपने मेरी किसी भी समकालीन से ज़्यादा मदद की है। सिर्फ़ उम्र के मामले में समकालीन। उपहारों में नहीं।

भगवान उपहार देते हैं। उन्होंने ईमेल से जवाब दिया, और उन्होंने कहा कि हम सभी कई अन्य लोगों के कंधों पर खड़े हैं। मैंने मॉर्गन को फोन किया, और मैंने कहा, मैं अब मर सकता हूँ।

मैंने अपनी पहचान बना ली है। मेरे करियर में यह दूसरी बार है जब मैंने ऐसा किया। दूसरी बार मैं अपने डेस्क पर दो छात्रों के साथ बैठा था जो कैपिंग मंत्रालय में थे, और मुझे एक कॉल आया, जैसा कि मैंने पहले एक व्याख्यान में बताया था, जिम पैकर, जेआई पैकर का कॉल।

मॉर्गन और मैं मिलकर ज़ोंडरवन पर एक बहुत ही महत्वपूर्ण अकादमिक पुस्तक का संपादन कर रहे थे। और पैकर सार्वभौमिकता पर अध्याय लिखने के लिए सहमत हो गए। यह शक्तिशाली है।

उन्होंने कहा, "आखिरकार मुझे अपनी फ़ाइल, सार्वभौमिकता पर सैकड़ों संदर्भों वाली कार्ड फ़ाइल को खाली करने का मौक़ा मिला। वाह, उन्होंने ऐसा किया। और वे सीधे-सादे और दयालु थे, लेकिन कठोर भी।

वैसे भी, और हमने लोगों, योगदानकर्ताओं को, फिर से, अलग-अलग प्रतिभागियों के साथ इन पुस्तकों में से एक की पेशकश की थी, हेल अंडर, हेल ऑन ट्रायल की एक निःशुल्क प्रति, एक पुस्तक जो मैंने 1995 में लिखी थी, जिसने बहुत से लोगों की मदद की है, कॉलेज स्तर पर और आम लोगों को जो सीखने में रुचि रखते हैं। यह बहुत सरल है। इसे सरल भाषा में व्यक्त किया गया है।

मैंने इनरवर्सिटी के लिए एडवर्ड फज के साथ भी बहस की, जो विनाशवाद की पुष्टि करते हैं। और मैंने निश्चित रूप से शाश्वत दंड पढ़ाया। *नर्क के दो दृष्टिकोण।*

और पैकर ने मुझे फ़ोन किया। उसने कहा, मुझे *हेल ऑन ट्रायल की एक कॉपी चाहिए*। मैंने कहा, आपको *हेल ऑन ट्रायल की एक कॉपी चाहिए*? आपने उस किताब के बैक कवर के लिए एक सिफ़ारिश लिखी थी।

तुम्हें इसकी क्या ज़रूरत हो सकती है? और मैंने उसके शब्दों को काट दिया। मुझे याद है कि जब तक उन्होंने मुझे ज़मीन में नहीं गाड़ दिया। मैंने इस पर बहुत निशान लगाए हैं।

मुझे एक और कॉपी चाहिए। मैंने कहा, हेलेलुयाह। और मैंने अपने दो छात्रों से कहा, तुम मेरे गवाह हो।

तो ये मेरी प्रसिद्धि के दो दावे हैं। और भगवान पापियों के लिए अच्छे हैं। लेकिन कार्सन ने मेरी बहुत मदद की है।

यहाँ बताया गया है कि उन्होंने पिछले कुछ सालों में क्या किया है, अपने शोध प्रबंध से शुरू करके, इसे और अधिक सामान्य भाषा में प्रस्तुत किया है। यह एक भारी पाठ है। ईश्वरीय संप्रभुता और मानवीय जिम्मेदारी, बाइबिल के दृष्टिकोण और इरादा।

उस किताब से शुरू करते हुए, उन्होंने जो किया वह उन बातों को स्पष्ट करना था जिन्हें मैं बाइबल की शिक्षाओं का वर्षों तक व्याख्यात्मक अध्ययन करने से सच मानता था, लेकिन मैं उन्हें उस तरह से व्यक्त नहीं कर सकता था। मैं वह किताब पढ़ रहा हूँ, और मैं कहता हूँ कि यह वही है जो मैं जानता हूँ और मानता हूँ। और बार-बार, उन्होंने मेरी शिक्षा को बदल दिया है उन बातों को स्पष्ट करके जो वास्तव में बाइबल से संबंधित हैं लेकिन कभी-कभी मेरे जैसे कम ज्ञानी लोगों के लिए उन्हें समझना मुश्किल होता है।

अगला पाप, मुझे अभी भी पाप के सिद्धांत के बारे में कार्सन का परिचय बहुत मददगार लगता है। पाप शैतान के काम से जुड़ा हुआ है, इस पर ध्यान दें। दूसरा, पाप शैतान और शैतानी ताकतों के काम से पूरी तरह जुड़ा हुआ है।

दूसरे शब्दों में कहें तो पाप का एक लौकिक/राक्षसी आयाम है। सर्प पहले मानव को पाप में उतरने के लिए प्रेरित करता है। उत्पत्ति तीन, जिसे बाद में शैतान के रूप में पहचाना गया।

प्रकाशितवाक्य 12, नौ। उत्पत्ति में पाठ हमें यह नहीं बताता कि यह कैसे हुआ कि शैतान ने सबसे पहले पाप किया। लेकिन उत्पत्ति तीन की शुरुआती पंक्तियाँ यह स्पष्ट करती हैं कि चूँकि उसे परमेश्वर ने बनाया था, इसलिए साँप का परमेश्वर के समान कोई स्वतंत्र दर्जा नहीं है, बल्कि वह अधिक गहरा है, लेकिन गहरे रंग का है।

ईश्वर की तरह उसका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है, बल्कि वह एक गहरे रंग में है। यानी ज्ञानमीमांसा, सत्तामीमांसा द्वैतवाद झूठा है। ठीक है।

अच्छाई और बुराई के कोई शाश्वत सिद्धांत नहीं हैं। अरे नहीं, नहीं, नहीं, नहीं, नहीं, नहीं, नहीं। भगवान ने बुराई नहीं बनाई और भगवान ने शैतान को भी बुरा नहीं बनाया।

चूँकि परमेश्वर द्वारा बनाई गई सृष्टि में सब कुछ बहुत अच्छा था, इसलिए उत्पत्ति 131 में, कोई यह मान सकता है कि यह साँप के बारे में भी सच था। जब उसे बनाया गया था, तो वह अच्छा था। स्पष्ट संदर्भ अनुमान है।

स्पष्ट निष्कर्ष यह है कि सर्प स्वयं किसी समय पर गिर गया था, जो आदम और हव्वा के पतन से पहले का है। यह एक ऐसा निष्कर्ष है जिसे यहूदा निकालने के लिए तैयार है। यहूदा की छठी आयत बताती है कि पाप के आयाम मानव जाति से परे तक फैले हुए हैं।

मैं मानव जाति से परे फैले मानव पाप के परिणामों, सृजित व्यवस्था के भ्रष्टाचार और सृजित व्यवस्था के निराशा, बंधन और क्षय के अधीन होने की बात नहीं कर रहा हूँ, रोमियों 8:20-21। बल्कि, मैं विद्रोही स्वर्गीय प्राणियों या स्वर्गदूतों के पाप की बात कर रहा हूँ। हालाँकि शास्त्र इस दयनीय वास्तविकता के बारे में अपेक्षाकृत कम कहते हैं, लेकिन इसमें छोटी-छोटी खिड़कियाँ थीं।

यह इस पूर्ववर्ती पतन के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जो अत्यधिक प्रकाश डालने वाला है। हमारे अपने संघर्ष का एक हिस्सा इस अंधेरी दुनिया की शक्तियों और स्वर्गीय क्षेत्रों में दुष्टता की आध्यात्मिक शक्तियों के विरुद्ध है। इफिसियों 6:12.

संघर्ष में एक लौकिक, बल्कि स्वर्गीय आयाम है जिसकी झलक फिर से अय्यूब के पहले दो अध्यायों में मिलती है। बाइबल में इस स्वर्गदूतीय गैर-मानवीय पाप की तीन और विशेषताएँ मानव पाप के तरीके को कुछ हद तक एक प्रकार की बाधा प्रदान करती हैं। एक, प्रारंभिक मानव पाप ने मानव जाति को संक्रमित किया और पूरी जाति पर परमेश्वर के क्रोध को उतारा।

प्रारंभिक स्वर्गदूतीय पाप ने उन लोगों को भ्रष्ट कर दिया जिन्होंने पाप किया जबकि बाकी लोग अप्रभावित रहे। दो जातियों में पाप की संरचना के तरीके में इस मूलभूत अंतर के साथ, मानवीय और स्वर्गदूतीय परिवर्तन स्वर्गदूतों की गैर-जैविक और गैर-उत्पादक प्रकृति पर निर्भर करते हैं। यीशु के अनुसार, स्वर्गदूत विवाह नहीं करते हैं।

मैथ्यू 22:30 में कहीं भी स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया है। दूसरा, परमेश्वर की कृपा से, पतित मनुष्यों के लिए एक उद्धारक उत्पन्न हुआ है, लेकिन स्वर्गदूतों के लिए कोई नहीं। उद्धारण, क्योंकि निश्चित रूप से वह स्वर्गदूतों की नहीं बल्कि अब्राहम के वंशजों की मदद करता है।

इब्रानियों 2:16. तुलना करें 2:5. राक्षसों की भीड़ पूरी तरह से बिना किसी उम्मीद के रहती है। वे जानते हैं कि उनके अंतहीन सचेत पीड़ा के लिए एक नियत समय है। मैथ्यू 8:29. तुलना करें प्रकाशितवाक्य 20:10. उनमें से कोई भी यह नहीं जानता कि ये शब्द, उद्धारण, हे थके हुए और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ। मैं तुम्हें आराम दूंगा। मैथ्यू 11:28 उनके लिए है।

कम से कम, इस सत्य की मान्यता से उद्धार प्राप्त पुरुषों और महिलाओं में अनुग्रह की संप्रभुता के प्रति विस्मयकारी विनम्रता और कृतज्ञता पैदा होनी चाहिए। भगवान हमें बचाने के लिए बाध्य नहीं थे। उन्होंने पतित स्वर्गदूतों को नहीं बचाने का फैसला किया।

तीन, कोई भी पाठ स्वर्गदूतों को भगवान की छवि में इमागो देई के रूप में नहीं दर्शाता है, जिस तरह से यह दावा मनुष्यों के लिए किया जाता है। उत्पत्ति 1:26-27.

इसके अलावा, इन तीन अवलोकनों को एक साथ जोड़ने के लिए, भगवान की मुक्ति प्राप्त छवि धारकों के लिए अंतिम आशीर्वाद, एक बार जब उनका पाप पूरी तरह से दूर हो जाता है, तो वह है आनंदमय दर्शन। वे उसका चेहरा देखेंगे। प्रकाशितवाक्य 22:4. सर्वोच्च श्रेणी के स्वर्गदूतों के विपरीत, जो परमेश्वर की उपस्थिति में लगातार अपने पंखों से अपने चेहरे को ढके रहते हैं।

यशायाह 6:2. प्रकाशितवाक्य 4:8 से तुलना करें। कम से कम एक तरीका तो है जिसमें शैतान और उसके अनुयायियों के पाप का परिणाम पुनर्जन्म न लेने वाले, पश्चाताप न करने वाले मनुष्यों के पाप के परिणाम के समान है। इसका अंत अनंत सचेत पीड़ा में होता है। प्रकाशितवाक्य 20:10. प्रकाशितवाक्य 14:11 से तुलना करें। शैतान शैतान होना बंद नहीं करता और आश्चर्यजनक रूप से शुद्ध और पवित्र नहीं बन जाता, जब उसे अंततः और हमेशा के लिए आग की झील में डाल दिया जाता है।

हमेशा के लिए वह दुष्ट रहेगा और उसे दंडित किया जाएगा। इसी तरह, बाइबल में इस बात का कोई सबूत नहीं है कि नरक शुद्ध किए गए मनुष्यों से भरा होगा। वहाँ कोई शोधन-स्थल नहीं है।

कोई तीसरा स्थान नहीं है। जैसा कि आधिकारिक कैथोलिक धर्मशास्त्र अभी भी सिखाता है, जैसा कि वेटिकन II के दस्तावेज़ दिखाते हैं, यह एक झूठी उम्मीद है। नरक के निवासी अभी भी ईश्वर के औचित्य के बजाय आत्म-औचित्य का पीछा करेंगे।

वे परमेश्वर से नफरत करते हुए भी खुद से प्यार करेंगे, और उन्हें पाप का उचित दंड मिलना जारी रहेगा। यह अनन्त दण्ड के कठिन मामले को समझाने में मदद करता है। यदि पश्चाताप नहीं है, तो दण्ड जारी रहता है।

तीसरा, पाप को कई तरीकों से दर्शाया जाता है। तीसरा, अब तक, मैंने मुख्य रूप से सामान्य शब्द पाप का उपयोग किया है, लेकिन पाप को कई शब्दों, अभिव्यक्तियों और कथात्मक विवरणों द्वारा दर्शाया गया है। पाप को उल्लंघन के रूप में देखा जा सकता है, जो उन कानूनों को पूर्व निर्धारित करता है जिनका उल्लंघन किया जा रहा है।

पाप को कभी-कभी एक ऐसी शक्ति के रूप में चित्रित किया जाता है जो हम पर विजय प्राप्त करती है। अक्सर, पाप अनिवार्य रूप से मूर्तिपूजा से जुड़ा होता है। पाप को गंदगी के रूप में, लक्ष्य से चूकने के रूप में, मूर्खता के रूप में, शरीर से जुड़े होने के रूप में, एक अंग्रेजी शब्द में व्यक्त करने के लिए एक कुख्यात कठिन अवधारणा के रूप में, अविश्वास के रूप में, गुलामी के रूप में, आध्यात्मिक व्यभिचार के रूप में, और अवज्ञा के रूप में देखा जा सकता है।

पाप व्यक्तियों का अपराध है, लेकिन यह गहराई से सामाजिक और बहु-पीढ़ीगत है। पिताओं के पापों का दण्ड तीसरी और चौथी पीढ़ी तक बच्चों को भुगतना पड़ता है, और हिजकिय्याह के दिनों में किए गए पाप यरूशलेम और उसके मंदिर के विनाश में अपने अपरिहार्य परिणाम लेकर आते हैं। बाइबल अक्सर पाप को व्यक्तियों के अपराध के रूप में दर्शाती है।

अन्य समयों में यह दर्शाता है कि कैसे कुछ पक्षों के पाप दूसरों को निराशाजनक पीड़ितों में बदल देते हैं। ऐ की लड़ाई में आकान के पाप ने उसे उसके परिवार के साथ मार डाला। विरोध करने वालों के पापों ने, जिन्होंने दानियेल को फंसाने और उसे शेर की मांद में फेंकने की कोशिश की, दानियेल में, शायद यह अध्याय छह है, उन अभियुक्तों को उनके परिवारों के साथ फेंक दिया गया।

यह बात हम माताओं और पिताओं के लिए लागू होती है कि हम अपने बच्चों और नाती-नातिनों को अपने बुरे, बुरे उदाहरणों और ईश्वर के खिलाफ विद्रोह के द्वारा नरक में भेजने में मदद कर सकते हैं। कार्सन लिखते हैं कि पाप के कुछ सबसे शक्तिशाली चित्रण उन कथाओं में होते हैं जहाँ शब्द का इस्तेमाल नहीं किया जाता क्योंकि इसका इस्तेमाल करना ज़रूरी नहीं है। उदाहरण के लिए, यूसुफ के भाइयों के बीच बातचीत के विवरण के बारे में सोचें जब वे बहस करते हैं कि उसे मार दिया जाए या बेच दिया जाए और फिर जब वे अपने पिता से झूठ बोलते हैं।

अधिक प्रभावशाली रूप से, न्यायियों में अंतिम प्रमुख कथा ऐसी आत्मा-विनाशकारी, ईश्वर-अपमानजनक भ्रष्टाचार और क्षय को दर्शाती है कि कहानी में दिखावटी अच्छे लोग भी चौंकाने वाले अश्लील हैं। बाइबल द्वारा पाप को दर्शाने के बहुआयामी और शक्तिशाली तरीकों के प्रति गहन और बढ़ती संवेदनशीलता के बिना कोई भी बाइबल को समझ नहीं सकता। पाप धार्मिक निर्माणों में उलझा हुआ है।

चौथा, जिस तरह पाप को कई शब्दों, अभिव्यक्तियों और कथात्मक विवरणों द्वारा दर्शाया गया है, उसी तरह पिछला बिंदु भी शक्तिशाली धार्मिक निर्माणों में उलझा हुआ है। ये निर्माण इतने अधिक और समृद्ध हैं कि उन्हें किसी भी विवरण में बताने के लिए एक बहुत लंबी किताब की आवश्यकता होगी। यहाँ, मैं बिना किसी विशेष महत्व के क्रम में केवल कुछ ऐसे निर्माणों को सूचीबद्ध कर सकता हूँ।

मानवशास्त्र। बाइबल के पहले दो अध्याय पापरहित मनुष्यों को दर्शाते हैं। बाइबल के अंतिम दो अध्याय रूपांतरित, क्षमा किए गए, पाप-मुक्त मनुष्यों को दर्शाते हैं।

बीच के सभी अध्याय पापी मनुष्यों को दर्शाते हैं या उनका पूर्वानुमान लगाते हैं, सिवाय उन अध्यायों के जो यीशु की मानवता का वर्णन करते हैं और इस बात पर जोर देते हैं कि वह पूरी तरह से पाप रहित है। हममें से बाकी लोगों के लिए, हम अपने पाप के विवरण पढ़ते हैं जो पाप की सार्वभौमिकता और व्यापकता को दर्शाते हैं, उदाहरण के लिए, रोमियों 3:9-20, और हमारे संघीय प्रमुख, आदम के साथ इसका संबंध, उदाहरण के लिए, रोमियों 5:12-21। ऐसे सबूतों से, वसंत धर्मशास्त्रीय सूत्रीकरण कुछ शब्दों में बाइबल क्या कहती है, इसका सारांश देने का प्रयास करते हैं।

हम मूल पाप और कुल भ्रष्टता की बात करते हैं, ध्यान से समझाते हैं कि हम ऐसी अभिव्यक्तियों से क्या मतलब रखते हैं और क्या नहीं। यीशु मसीहा के एकमात्र अपवाद के साथ, हमारा मतलब निश्चित रूप से न केवल यह है कि अदन और पतन के बीच और पतन और पुनरुत्थान से पहले, नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में मौजूद सभी मानव प्राणी न केवल पापी हैं, बल्कि यह कि पाप एक

वैकल्पिक विशेषता नहीं है, जो अन्यथा बेदाग प्राणियों पर शिथिल रूप से थोपी गई है, बल्कि एक व्यापक शक्ति और अपराध और त्रासदी है जो सभी मानव अनुभव को परिभाषित करती है, जो अनुग्रह की मांग करती है। दो धार्मिक निर्माण जिसमें पाप उलझा हुआ है।

इस निबंध के शुरुआती पैराग्राफ पाप और उद्धारशास्त्र के बीच कुछ संबंधों की ओर इशारा करते हैं। कोई व्यक्ति न्यूमेटोलॉजी, पवित्र आत्मा के सिद्धांत, विशेष रूप से पतित मानव जाति के उन लोगों में मौलिक विभाजन पर जोर दे सकता है जो केवल प्राकृतिक हैं और जिनके पास पवित्र आत्मा है, 1 कुरिन्थियों 2:10-15। पाप के कार्य का प्रभाव उन सभी में देखा जा सकता है जो ईश्वर से पैदा हुए हैं, भले ही तंत्र अस्पष्ट हों।

मैं एक फुटनोट का उल्लेख करना चाहता हूँ। अब्राहम कुइपर, विजडम, एंड वंडर, कॉमन ग्रेस इन साइंस एंड आर्ट। यह स्पष्ट है, उद्धरण, कि यह एक प्राकृतिक मनुष्य और एक आध्यात्मिक मनुष्य के बीच विरोधाभास है।

इसके साथ ही, शास्त्र केवल एक व्यक्ति को संदर्भित नहीं करता है जो पवित्र शास्त्र को ध्यान में रखता है और दूसरा जो पवित्र शास्त्र को ध्यान में नहीं रखता है। इसकी घोषणा परमेश्वर की आत्मा को प्राप्त करने और न प्राप्त करने के बीच के अंतर को स्थापित करके बहुत गहराई तक जाती है, 1 कुरिन्थियों 2:12। आत्मा आत्मा का फल उत्पन्न करती है, गलातियों 5:22-23, जो शरीर के कार्यों के विरुद्ध है, आयत 19-21, जो पाप का वर्णन करने का एक और तरीका है।

फिलहाल, हम ईश्वर की उद्धार योजना के केवल एक तत्व, अर्थात् धर्मांतरण पर कुछ टिप्पणियों तक ही सीमित हैं। धर्म के समाजशास्त्र में, जैसा कि लोकप्रिय बोलचाल में है, धर्मांतरण एक धर्म से दूसरे धर्म में निष्ठा के परिवर्तन को दर्शाता है। एक बौद्ध मुसलमान बन जाता है, या इसके विपरीत।

एक ताओवादी ईसाई बन जाता है। एक ईसाई नास्तिक बन जाता है। एक नास्तिक हिंदू बन जाता है।

हर मामले में, हम आम तौर पर कहते हैं कि व्यक्ति ने धर्म परिवर्तन कर लिया है। हम धर्म परिवर्तन की भाषा का उपयोग तब भी कर सकते हैं जब कोई व्यक्ति संप्रदाय या निष्ठा बदलता है। हम बैपटिस्ट के रोमन कैथोलिक धर्म में धर्म परिवर्तन की बात करते हैं।

कार्सन बैपटिस्ट हैं। या इसके विपरीत। हालाँकि, ईसाई धर्म में धर्मांतरण पर अधिक सटीक ध्यान दिया जाता है।

घटना विज्ञान की दृष्टि से, जब कोई व्यक्ति वास्तव में ईसाई बन जाता है, तो उसकी धार्मिक निष्ठा बदल जाती है। इसलिए, हम अभी भी धर्म परिवर्तन शब्द समूह का उपयोग विशुद्ध रूप से वर्णनात्मक तरीके से कर सकते हैं। लेकिन बाहरी घटना के पीछे अलौकिक परिवर्तन छिपा है।

बाइबिल की शब्दावली में, एक व्यक्ति अंधकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से जीवन की ओर चला गया है। वह व्यक्ति फिर से जन्मा है, ऊपर से जन्मा है। एक बार अंधी आँखें अब देख सकती हैं।

खोई हुई भेड़ मिल गई है। प्राकृतिक की जगह अलौकिक ने ले ली है। संबंधात्मक और न्यायिक रूप से, एक पापी का परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप हो गया है।

एस्केटोलॉजिकली, व्यक्ति पहले से ही उस राज्य का हिस्सा है जिसका उद्घाटन हो चुका है और परिणामस्वरूप वह परिवर्तनकारी पुनरुत्थान और सभी चीजों की पूर्णता की निश्चित और सुनिश्चित आशा में रहता है। अंतिम परिणाम पूर्णता होगी। क्योंकि नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में किसी भी पाप या बुराई के दाग की अनुमति नहीं होगी।

ऐसे उपयोगों में, बेशक, धर्म परिवर्तन को उन लोगों पर सही तरीके से लागू नहीं किया जा सकता है जब वे धार्मिक निष्ठाओं को बदलते हैं। यह केवल उन लोगों पर लागू किया जा सकता है जो उस शब्द के सबसे मजबूत नए नियम के अर्थ में ईसाई बन जाते हैं। संक्षेप में, इस धार्मिक अर्थ में धर्म परिवर्तन में निहित परिवर्तन अनिवार्य रूप से ईश्वर की योजना और किसी व्यक्ति के जीवन में पाप का सामना करने और अंततः इसे पूरी तरह से नष्ट करने की शक्ति से जुड़ा हुआ है।

पवित्रीकरण। वर्तमान उद्देश्यों के लिए, हम स्थितिगत या निश्चित पवित्रीकरण जैसी श्रेणियों को छोड़ देंगे। इससे हमारे पास पवित्रता में बढ़ने की धार्मिक अवधारणा रह जाती है, एक ऐसी धारणा जिसे पवित्रीकरण शब्द का उपयोग किए बिना कई तरीकों से व्यक्त किया जा सकता है।

कार्सन शब्द अवधारणा भ्रांति से बचते हैं, जो कहता है कि उस वास्तविकता के बारे में बात करने के लिए आपके पास पवित्रीकरण या पवित्रीकरण शब्द होना चाहिए। नहीं, आपको इसकी ज़रूरत नहीं है। वह कानून किसने बनाया? बाइबल के लेखक ऐसे किसी कानून के बारे में नहीं जानते।

उदाहरण के लिए, फिलिप्पियों 3 में, पौलुस यह नहीं मानता कि उसने मसीह में पहले से ही पूर्ण परिपक्वता प्राप्त कर ली है। बल्कि, वह आगे बढ़ता है, उद्धरण, वह उस चीज़ को पकड़ने के लिए आगे बढ़ता है जिसके लिए मसीह, जिसके लिए मसीह यीशु ने मुझे पकड़ लिया। श्लोक 12, वह जो करने के लिए प्रयास करता है, जो आगे है, उद्धरण, वह पुरस्कार जीतने का लक्ष्य है जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में स्वर्ग की ओर बुलाया है।

पद 14, पुनरुत्थान अस्तित्व। पद 11 और 21, जो मसीह के क्रूस के शत्रुओं के विरुद्ध है, जिनका, उद्धरण, भाग्य विनाश है और जिनका परमेश्वर उनका पेट है और उनकी महिमा उनकी लज्जा में है। फिलिप्पियों 3 के पद 18 और 19। जो परिपक्व हैं उन्हें पौलुस के दृष्टिकोण को अपनाना चाहिए, उसके उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए, और जो हमने पहले ही प्राप्त कर लिया है, उसके अनुसार जीना चाहिए।

पद 14 से 17. दूसरे शब्दों में, पवित्रीकरण अब पौलुस और अन्य विश्वासियों में काम करता है, जो कि अंतिम महिमा में अंततः प्राप्त होने वाली चीज़ों की शुरुआत है। इसमें सुसमाचार के प्रति दृढ़ निष्ठा शामिल है जो सभी, उद्धरण, शरीर में भरोसा, पद 3, और विश्वास के आधार पर परमेश्वर से आने वाली धार्मिकता के लिए भावुक है, पद 9. दूसरे शब्दों में, पवित्रीकरण पाप को मृत्यु देने,

यीशु के अनुरूप होने, आने वाले चरमोत्कर्ष परिवर्तन की प्रत्याशा में नैतिक और आध्यात्मिक परिवर्तन के साथ जुड़ा हुआ है।

हमारे अगले व्याख्यान में, हम कार्सन के परिचय को जारी रखेंगे और और भी अच्छी बातें सीखेंगे, जैसा कि कुछ लोग कहेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा मानवता और पाप के सिद्धांतों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 9 है, पाप का सिद्धांत, डीए कार्सन, पाप का आंतरिक महत्व।